रात्रिक्लास 8/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

बापदादा ने बच्चों का मुखड़ा देखा, बच्चों ने बाप दादा का देखा यह कोई कम बात है क्या। जैसे बाप हाईएस्ट है वैसे बच्चे भी हैं। जैसे बाप ऊँच ते ऊँच वैसे बच्चे भी ऊँच ते ऊँच। सारी दुनियां में ऊँच ते ऊँच बापदादा और बच्चे। इतना फखुर है। यह नशा स्थाई होना चाहिए। हम ऊँच ते ऊँच बापदादा के बच्चे तो हम भी ऊँच ते ऊँच। देवताओं से भी ऊँच ठहरे। इतना नशा और ज्ञान बच्चों की बुद्धि में है। बाप, बच्चे भी समझते हैं, मेहमान भी समझते हैं। मेहमान के बच्चों को बापदादा को सम्भाल करनी है। बाबा कह देते हैं मेहमानों की ख़ातरी करना। शिवबाबा का भण्डारा है। यह है ऊँच ते ऊँच शिवबाबा का भण्डारा। बच्चों को जो चाहिए ब्राह्मणी को हुकुम करें। ब्राह्मणी को फिर सबसे पूछना है। बाबा भी वण्डरफुल जिसको कोई भी नहीं जानते। फिर तुमको वण्डरफुल विश्व का मालिक बनाते हैं। ज्ञान भी वण्डरफुल कोई की बुद्धि में बड़ा मुश्किल बैठता है। तुम सुनते हो 5000 वर्ष के बाद। जिससे तुम इतना ऊँच पद पाते हो। ज्ञान भी वण्डरफुल पाते हो। अच्छा अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। तो बेड़ा पार। याद करते–2 पार पहुँच जाते हैं। बाप खेवैया भी है। भित्ता–ठिक्कर में खेवैया क्या करेंगे। बच्चे समझते हैं, शिवबाबा बाग़वान भी है, खेवैया भी है। पतित–पावन भी है। ऊँच ते ऊँच बाप की महिमा भी ऊँच ते ऊँच है। रहने की जगह भी ऊँच है। तुम बच्चों से भी मैं थोड़ा ऊपर रहता हैं। मालूम है? अच्छा बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।